14

fo".k| lgl|ukeLrk=& III

प्रिय शिक्षार्थी पिछले पाठ में आपने विष्णु की विशेषताओं के साथ–साथ उनकी पूजा अर्थात स्मरण करने वाले श्लोको के विषय में पढ़ा। इस पाठ में आप विष्णु और उनके अन्य नामों के विषय में जानेंगे।

mÌ';

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- श्लोकों का शुद्ध रूप से उच्चारण कर पाने में; और
- विष्णु के अनेक नाम तथा उनके अर्थ समझ पानें में ।

d{kk & 5

fVIi.kh

14.1 fo".kq lglukeLrks= & III

Lrks=e~ A

gfj% Å¡ A

fo'o fo".kqoZ"kV~dkjks HkwrHkO;HkoRçHkq% A

Hkwr—n~HkwrHk`n~Hkkoks HkwrkRek Hkwrkkou% AA ƒ AA

1 विश्वम् : जो स्वयं में ब्रह्मांड हो जो हर जगह विद्यमान हो

2 विष्णुः जो हर जगह विद्यमान हो

3 वषट्कारः जिसका यज्ञ और आहुतियों के समय आवाहन किया जाता हो

4 भूतभव्यभवत्प्रभुः भूत, वर्तमान और भविष्य का स्वामी

5 भूतकृत् : सब जीवों का निर्माता

6 भूतभृत् : सब जीवों का पालनकर्ता

7 भावः भावना

8 भूतात्माः सब जीवों का परमात्मा

9 भूतभावनः सब जीवों उत्पत्ति और पालना का आधार

iwrkRek ijekRek p eqäkuka ijek xfr% A

v0;;% iq#"k% lk{kh {ks=Kks·{kj ,o p AA „ AA

10 पूतात्माः अत्यंत पवित्र सुगंधियों वाला

11 परमात्मा: परम आत्मा

12 मुक्तानां परमा गतिः सभी आत्माओं के लिए पहुँचने वाला अंतिम लक्ष्य

13 अव्ययः अविनाशी

14 पुरुषः पुरुषोत्तम

15 साक्षी बिना किसी व्यवधान के अपने स्वरुपभूत ज्ञान से सब कुछ देखने वाला

16 क्षेत्रज्ञः क्षेत्र अर्थात शरीरय शरीर को जानने वाला

17 अक्षरः कभी क्षीण न होने वाला

;kxk ;kxfonk urk çkkui#"k'oj% A
ukjflgoi% Jheku d'ko% i#"kkÙke% A … AA

18 योगः जिसे योग द्वारा पाया जा सके

19 योगविदां नेता: योग को जानने वाले योगवेत्ताओं का नेता

20 प्रधानपुरुषेश्वरः प्रधान अर्थात प्रकृतिय पुरुष अर्थात जीवय इन दोनों का स्वामी

21 नारसिंहवपुः नर और सिंह दोनों के अवयव जिसमे दिखाई दें ऐसे शरीर वाला

22 श्रीमान् : जिसके वक्ष स्थल में सदा श्री बसती हैं

23 केशवः जिसके केश सुन्दर हों

24 पुरुषोत्तमः पुरुषों में उत्तम

d{kk & 5

fVIi.kh

lo% 'ko% f'ko% LFkk.kqHkwrkfnfuf/kj0;;% A
lEHkoks Hkkouks Hkrk çHko% çHkqjh'oj% AA † AA

25 सर्वः सर्वदा सब कुछ जानने वाला

26 शर्वः विनाशकारी या पवित्र

27 शिवः सदा शुद्ध

28 स्थाणुः स्थिर सत्य

29 भूतादिः पंच तत्वों के आधार

30 निधिरव्ययः अविनाशी निधि

31 सम्भवः अपनी इच्छा से उत्पन्न होने वाले

32 भावनः समस्त भोक्ताओं के फलों को उत्पन्न करने वाले

33 भर्ता समस्त संसार का पालन करने वाले

34 प्रभवः पंच महाभूतों को उत्पन्न करने वाले

35 प्रभुः सर्वशक्तिमान भगवान्

36 ईश्वरः जो बिना किसी के सहायता के कुछ भी कर पाए

Lo;EHkw% 'kEHkqjkfnR;% iq"djk{kks egkLou% A
vukfnfu/kuks /kkrk fo/kkrk /kkrq#Ùke% AA ‡ AA

37 स्वयम्भूः जो सबके ऊपर है और स्वयं होते हैं

38 शम्भुः — भक्तों के लिए सुख की भावना की उत्पत्ति करने वाले हैं

39 आदित्यः — अदिति के पुत्र (वामन)

40 पुष्कराक्षः — जिनके नेत्र पुष्कर (कमल) समान हैं

41 महास्वनः — अति महान स्वर या घोष वाले

42 अनादि–निधनः जिनका आदि और निधन दोनों ही नहीं हैं

43 धाता : — शेषनाग के रूप में विश्व को धारण करने वाले

44 विधाता : — कर्म और उसके फलों की रचना करने वाले

45 धातुरुत्तमः — अनंतादि अथवा सबको धारण करने वाले हैं

vçes;ks â"khds'k% ineukHkks·ejçHkq% A
fo'odekZ euqLRo"Vk LFkfo"B% LFkfojks /kzo% AA ^AA

46 अप्रमेयः — जिन्हे जाना न जा सके

47 हृषीकेशः — इन्द्रियों के स्वामी

48 पद्मनाभः — जिसकी नाभि में जगत का कारण रूप पद्म स्थित है

49 अमरप्रभुः — देवता जो अमर हैं उनके स्वामी

50 विश्वकर्मा — विश्व जिसका कर्म अर्थात क्रिया है

51 मनुः — मनन करने वाले

52 त्वष्टा — संहार के समय सब प्राणियों को क्षीण करने वाले

53 स्थविष्ठः अतिशय स्थूल

54 स्थविरो ध्रुवः प्राचीन एवं स्थिर

vxkáã 'kk'orã —".kk ykfgrk{kã çrnuã A

çHkrfL=ddqc/kke ifo= e³xy ije AA ‰ AA

55 अग्राह्यः जो कर्मेन्द्रियों द्वारा ग्रहण नहीं किये जा सकते

56 शाश्वतः जो सब काल में हो

57 कृष्णः जिसका वर्ण श्याम हो

58 लोहिताक्षः जिनके नेत्र लाल हों

59 प्रतर्दनः जो प्रलयकाल में प्राणियों का संहार करते हैं

60 प्रभूतस् : जो ज्ञान, ऐश्वर्य आदि गुणों से संपन्न हैं

61 त्रिकाकुब्धाम : ऊपर, नीचे और मध्य तीनो दिशाओं के धाम हैं

62 पवित्रम् : जो पवित्र करे

63 मंगलं–परम् :जो सबसे उत्तम है और समस्त अशुभों को दूर करता है

bl'kkuã çk.knã çk.kk T;s"Bã J"Bã çtkifrã A

fgj.;xHkkZ HkwxHkkZ ek/kok e/kqlnuã AA ŠAA

64 ईशानः सर्वभूतों के नियंता

65 प्राणदः प्राणो को देने वाले

66 प्राणः जो सदा जीवित है

67 ज्येष्ठः सबसे अधिक वृद्ध या या बड़ा

68 श्रेष्ठः सबसे प्रशंसनीय

69 प्रजापतिः ईश्वररूप से सब प्रजाओं के पति

70 हिरण्यगर्भः ब्रह्माण्डरूप अंडे के भीतर व्याप्त होने वाले

71 भूगर्भः पृश्वी जिनके गर्भ में स्थित है

72 माधवः माँ अर्थात लक्ष्मी के धव अर्थात पति

73 मधुसूदनः मधु नामक दैत्य को मारने वाले

bl'ojk foØeh /kUoh e/kkoh foØe% Øe% A
vuÙkek nqjk/k"k% —rK% —frjkReoku~ AA ‹ AA

74 ईश्वरः सर्वशक्तिमान

75 विक्रमः शूरवीर

76 धन्वी धनुष धारण करने वाला

77 मेधावी बहुत से ग्रंथों को धारण करने के सामर्थ्य वाला

78 विक्रमः जगत को लांघ जाने वाला या गरुड़ पक्षी द्वारा गमन करने वाला

79 क्रमः क्रमण (लांघना, दौड़ना) करने वाला या क्रम (विस्तार) वाला

80	अनुत्तमः	जिससे उत्तम और कोई न हो
81	दुराधर्षः	जो दैत्यादिकों से दबाया न जा सके
82	कृतज्ञः	प्राणियों के किये हुए पाप पुण्यों को जानने वाले
83	कृतिः	सर्वात्मक
84	आत्मवान्	अपनी ही महिमा में स्थित होने वाले

lqjs'k% 'kj.ka 'keZ fo'ojsrk% çtkHko% A
vg% laoRljks O;ky% çR;;% loZn'kZu% AA få AA

85	सुरेशः	देवताओं के ईश
86	शरणम्	दीनों का दुःख दूर करने वाले
87	शर्म	परमानन्दस्वरूप
88	विश्वरेताः	विश्व के कारण
89	प्रजाभवः	जिनसे सम्पूर्ण प्रजा उत्पन्न होती है
90	अहः	प्रकाशस्वरूप
91	संवत्सरः	कालस्वरूप से स्थित हुए
92	व्यालः	व्याल (सर्प) के समान ग्रहण करने में न आ सकने वाले
93	प्रत्ययः	प्रतीति रूप होने के कारण
94	सर्वदर्शनः	सर्वरूप होने के कारण सभी के नेत्र हैं

vt% lo'oj% fl)% flf)% lokfnjP;qr% A
o"kkdfije;kRek lo;kxfofu%lr% AA ff AA

94	सर्वदर्शनः	सर्वरूप होने के कारण सभी के नेत्र हैं
95	अजः	अजन्मा
96	सर्वेश्वरः	ईश्वरों का भी ईश्वर
97	सिद्धः	नित्य सिद्ध
98	सिद्धिः	सबसे श्रेष्ठ
99	सर्वादिः	सर्व भूतों के आदि कारण
100	अच्युतः	अपनी स्वरुप शक्ति से च्युत न होने वाले
101	वृषाकपिः	वृष (धर्म) रूप और कपि (वराह) रूप
102	अमेयात्मा	जिनके आत्मा का माप परिच्छेद न किया जा सके
103	सर्वयोगविनिसृतः	सम्पूर्ण संबंधों से रहित

olqoZlqeuk% lR;% lekRek·lfEer% le% A
vek?k% iq.Mjhdk{kks o"kdeks o"kk—fr% AA f„ AA

104	वसुः	जो सब भूतों में बसते हैं और जिनमे सब भूत बसते हैं
105	वसुमनाः	जिनका मन प्रशस्त (श्रेष्ठ) है

106 सत्यः — सत्य स्वरुप

107 समात्मा — जो राग द्वेषादि से दूर हैं

108 सम्मितः — समस्त पदार्थों से परिच्छिन्न

109 समः — सदा समस्त विकारों से रहित

110 अमोघः — जो स्मरण किये जाने पर सदा फल देते हैं

111 पुण्डरीकाक्षः — हृदयस्थ कमल में व्याप्त होते हैं

112 वृषकर्मा — जिनके कर्म धर्मरूप हैं

113 वृषाकृतिः — जिन्होंने धर्म के लिए ही शरीर धारण किया है

#æk cgqf'kjk cHkz#fo'o;kfu% 'kqfpJok% A

ve`r% 'kk'orLFkk.kqoZjkjksgks egkrik% AA f… AA

113 वृषाकृतिः — जिन्होंने धर्म के लिए ही शरीर धारण किया है

114 रुद्रः — दुःख को दूर भगाने वाले

115 बहुशिरः — बहुत से सिरों वाले

116 बभ्रुः — लोकों का भरण करने वाले

117 विश्वयोनिः — विश्व के कारण

118 शुचिश्रवाः — जिनके नाम सुनने योग्य हैं

119 अमृतः — जिनका मृत अर्थात मरण नहीं होता

d{kk & 5

fVIi.kh

120 शाश्वतः–स्थाणुः शाश्वत (नित्य) और स्थाणु (स्थिर)

121 वरारोहः जिनका आरोह (गोद) वर (श्रेष्ठ) है

122 महातपः जिनका तप महान है

I oxZ% I ofonHkkufo"oDI uk tukn Zu% A

onk onfon0; ³xk onk³xk onfor dfo% AA ƒ† AA

123 सर्वगः जो सर्वत्र व्याप्त है

124 सर्वविद्भानुः जो सर्ववित् है और भानु भी है

125 विष्वक्सेनः जिनके सामने कोई सेना नहीं टिक सकती

126 जनार्दनः दुष्टजनों को नरकादि लोकों में भेजने वाले

127 वेदः वेद रूप

128 वेदविद् वेद जानने वाले

129 अव्यंगः जो किसी प्रकार ज्ञान से अधूरा न हो

130 वेदांगः वेद जिनके अंगरूप हैं

131 वेदविद् वेदों को विचारने वाले

132 कविः सबको देखने वाले

d{kk & 5

fVi.kh

ykdk/;{k% l|jk/;{kk /kek/;{k% —rk—r% A
pr|jkRek pr|o;g'pr|n"V'pr|Hk|t% AA f‡ AA

133 लोकाध्यक्षः समस्त लोकों का निरीक्षण करने वाले

134 सुराध्यक्षः सुरों (देवताओं) के अध्यक्ष

135 धर्माध्यक्षः धर्म और अधर्म को साक्षात देखने वाले

136 कृताकृतः कार्य रूप से कृत और कारणरूप से अकृत

137 चतुरात्मा चार पृथक विभूतियों वाले

138 चतुर्व्यूहः चार व्यूहों वाले

139 चतुर्दंष्ट्रः चार दाढ़ों या सींगों वाले

140 चतुर्भुजः चार भुजाओं वाले

Hkkft".kqHkkktu Hkkäk lfg".kqtxnkfnt% A
vu?kk fot;k trk fo'o;kfu% iquol|% AA f^AA

141 भ्राजिष्णुः एकरस प्रकाशस्वरूप

142 भोजनम् प्रकृति रूप भोज्य माया

143 भोक्ता पुरुष रूप से प्रकृति को भोगने वाले

144 सहिष्णुः दैत्यों को भी सहन करने वाले

145 जगदादिजः जगत के आदि में उत्पन्न होने वाले

146 अनघः जिनमे अघ (पाप) न हो

147 विजयः — ज्ञान, वैराग्य व् ऐश्वर्य से विश्व को जीतने वाले

148 जेता — समस्त भूतों को जीतने वाले

149 विश्वयोनिः — विश्व और योनि दोनों वही हैं

150 पुनर्वसुः — बार बार शरीरों में बसने वाले

miUæks okeu% çk'kjek?k% 'kfp:ftr% A
vrhUæ% l³xg% lxks /k`rkRek fu;eks ;e% AA f‰ AA

151 उपेन्द्रः — अनुजरूप से इंद्र के पास रहने वाले

152 वामनः — भली प्रकार भजने योग्य हैं

153 प्रांशुः — तीनो लोकों को लांघने के कारण प्रांशु (ऊंचे) हो गए

154 अमोघः — जिनकी चेष्टा मोघ (व्यर्थ) नहीं होती

155 शुचिः — स्मरण करने वालों को पवित्र करने वाले

156 ऊर्जितः — अत्यंत बलशाली

157 अतीन्द्रः — जो बल और ऐश्वर्य में इंद्र से भी आगे हो

158 संग्रहः — प्रलय के समय सबका संग्रह करने वाले

159 सर्गः — जगत रूप और जगत का कारण

160 धृतात्मा — अपने स्वरुप को एक रूप से धारण करने वाले

161 नियमः — प्रजा को नियमित करने वाले

162 यमः — अन्तः करण में स्थित होकर नियमन करने वाले

d{kk & 5

fVIi.kh

o|k o|% lnk;kxh ohjgk ek/kok e/kq% A
vrhfUæ;k egkek;k egkRlkgk egkcy% AA fŠ AA

163 वेद्यः कल्याण की इच्छा वालों द्वारा जानने योग्य

164 वैद्यः सब विद्याओं के जानने वाले

165 सदायोगी सदा प्रत्यक्ष रूप होने के कारण

166 वीरहा धर्म की रक्षा के लिए असुर योद्धाओं को मारते हैं

167 माधवः विद्या के पति

168 मधुः शहद के समान प्रसन्नता उत्पन्न करने वाले

169 अतीन्द्रियः इन्द्रियों से परे

170 महामायः मायावियों के भी स्वामी

171 महोत्साहः जगत की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के लिए तत्पर रहने वाले

172 महाबलः सर्वशक्तिमान

egkcf)egkoh;Z egk'kfäegk|fr% A
vfun'';oi% Jhekue;kRek egkfæ/kd AA f‹ AA

173 महाबुद्धिः सर्वबुद्धिमान

174 महावीर्यः संसार के उत्पत्ति की कारणरूप

175	महाशक्तिः	अति महान शक्ति और सामर्थ्य के स्वामी
176	महाद्युतिः	जिनकी बाह्य और अंतर दयुति (ज्योति) महान है
177	अनिर्देश्यवपुः	जिसे बताया न जा सके
178	श्रीमान्	जिनमे श्री है
179	अमेयात्मा	जिनकी आत्मा समस्त प्राणियों से अमेय(अनुमान न की जा सकने योग्य) है
180	महाद्रिधृक्	मंदराचल और गोवर्धन पर्वतों को धारण करने वाले

eg"okIk eghHkrk Jhfuok I% I rk xfr% A
vfu#)% I jkuUnk xkfoUnk xkfonk ifr% AA „å AA

181	महेष्वासः	जिनका धनुष महान है
182	महीभर्ता	प्रलयकालीन जल में डूबी हुई पृथ्वी को धारण करने वाले
183	श्रीनिवासः	श्री के निवास स्थान
184	सतां गतिः	संतजनों के पुरुषार्थसाधन हेतु
185	अनिरुद्धः	प्रादुर्भाव के समय किसी से निरुद्ध न होने वाले

186 सुरानन्दः सुरों (देवताओं) को आनंदित करने वाले

187 गोविन्दः वाणी (गौ) को प्राप्त कराने वाले

188 गोविदां–पतिः गौ (वाणी) पति

ejhfpneuk gl% l|i.kk Hk|txkÙke% A
fgj.;ukHk% l|rik% ineukHk% çtkifr% AA „f AA

189 मरीचिः तेजस्वियों के परम तेज

190 दमनः राक्षसों का दमन करने वाले

191 हंसः संसार भय को नष्ट करने वाले

192 सुपर्णः धर्म और अधर्मरूप सुन्दर पंखों वाले

193 भुजगोत्तमः भुजाओं से चलने वालों में उत्तम

194 हिरण्यनाभः हिरण्य (स्वर्ण) के समान नाभि वाले

195 सुतपाः सुन्दर तप करने वाले

196 पद्मनाभः पद्म के समान सुन्दर नाभि वाले

197 प्रजापतिः प्रजाओं के पिता

veR;% lo–d fl g% l U/kkrk lfU/keku fLFkj% A
vtk ne"k.k% 'kkLrk foJ|rkRek l|jkfjgk AA „„ AA

198 अमृत्युः जिसकी मृत्यु न हो

199 सर्वदृक् — प्राणियों के सब कर्म–अकर्मादि को देखने वाले

200 सिंहः — हनन करने वाले हैं

201 सन्धाता — मनुष्यों को उनके कर्मों के फल देते हैं

202 सन्धिमान् — फलों के भोगनेवाले हैं

203 स्थिरः — सदा एकरूप हैं

204 अजः — भक्तों के हृदय में रहने वाले और असुरों का संहार करने वाले

205 दुर्मषणः — दानवादिकों से सहन नहीं किये जा सकते

206 शास्ता — श्रुति स्मृति से सबका अनुशासन करते हैं

207 विश्रुतात्मा — सत्यज्ञानादि रूप आत्मा का विशेषरूप से श्रवण करने वाले

208 सुरारिहा — सुरों (देवताओं) के शत्रुओं को मारने वाले

x#x#rek /kke lR;% lR;ijkØe% A
fufe"kk·fufe"k% lXoh okpLifr#nkj/kh% AA „… AA

209 गुरुः — सब विद्याओं के उपदेष्टा और सबके जन्मदाता

210 गुरुतमः — ब्रह्मा आदिको भी ब्रह्मविद्या प्रदान करने वाले

211 धाम — परम ज्योति

212 सत्यः — सत्य–भाषणरूप, धर्मस्वरूप

213 सत्यपराक्रमः — जिनका पराक्रम सत्य अर्थात अमोघ है

214 निमिषः जिनके नेत्र योगनिद्रा में मूंदे हुए हैं

215 अनिमिषः मत्स्यरूप या आत्मारूप

216 स्रग्वी वैजयंती माला धारण करने वाले

217 वाचस्पतिः–उदारधीः विद्या के पति,सर्व पदार्थों को प्रत्यक्ष करने वाले

vx.khxzke.kh% Jheku~ U;k;ks urk lehj.k% A
lglzew/kkZ fo'okRek lglzk{k% lglzikr~ AA „† AA

218 अग्रणीः मुमुक्षुओं को उत्तम पद पर ले जाने वाले

219 ग्रामणीः भूतग्राम का नेतृत्व करने वाले

220 श्रीमान् जिनकी श्री अर्थात कांति सबसे बढ़ी चढ़ी है

221 न्यायः न्यायस्वरूप

222 नेता जगतरूप यन्त्र को चलाने वाले

223 समीरणः श्वासरूप से प्राणियों से चेष्टा करवाने वाले

224 सहस्रमूर्धा सहस्र मूर्धा (सिर) वाले

225 विश्वात्मा विश्व के आत्मा

226 सहस्राक्षः सहस्र आँखों या इन्द्रियों वाले

227 सहस्रपात् सहस्र पाद (चरण) वाले

vkorZuks fuoÙkkRek laor% laçenZu% A
vg% laorZdks ofàjfuyks /kj.khè/kj% AA „‡ AA

228	आवर्तनः	संसार चक्र का आवर्तन करने वाले हैं
229	निवृत्तात्मा	संसार बंधन से निवृत्त (छूटे हुए) हैं
230	संवृतः	आच्छादन करनेवाली अविद्या से संवृत्त (ढके हुए) हैं
231	संप्रमर्दनः	अपने रूद्र और काल रूपों से सबका मर्दन करने वाले हैं
232	अहः संवर्तकः	दिन के प्रवर्तक हैं
233	वह्निः	हविका वहन करने वाले हैं
234	अनिलः	अनादि
235	धरणीधरः	वराहरूप से पृथ्वी को धारण करने वाले हैं

ikBxr iz'u& 14-1

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. भूतकृद्भूतभृद्भावो .... भूतभावनः ।।
2. पूतात्मा परमात्मा च .... परमा गतिः ।
3. योगो .... नेता प्रधानपुरुषेश्वरः ।

d{kk & 5

fVli.kh

4. स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः .... महास्वनः ।

5. अप्रमेयो .... पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।

6. अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो .... प्रतर्दनः ।

7. ईशानः .... प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।

8. सुरेशः .... शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः ।

9. अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः .... ।

vkius D;k lh[kk

- श्लोकों का शुद्ध रूप में उच्चारण करना।
- विष्णु के नाम तथा उनके अर्थ।

ikBkr iz'u

1. नीचे दिए गये पदों के अर्थ लिखिए -

   अ) समीरणः

   ब) अग्रणीर्ग्रामणीः

   स) विश्वश्रुतात्मा

   द) भुजगोत्तमः

य) अनिरुद्धः

व) अनिर्देश्यवपुः

र) वीरहा

mÙkjekyk

14.1

(1)

1. भूतारमा
2. मुक्तानां
3. योगविदां
4. पुष्काराक्षो
5. हृषीकेशः
6. लोहिताक्षः
7. प्राणहः
8. शरणं
9. सर्वदिरच्युतः